P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

प्राचीन भारतीय देवी मूर्तियाँ : अलंकरण एवं स्वरूप

योगेन्द्र प्रसाद
शोध छात्र,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डा0 बी0आर0ए0 विश्वविद्यालय,
आगरा

सुगम आनन्द
प्रोफेसर,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डा0 बी0आर0ए0
विश्वविद्यालय, आगरा

सारांश

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के साक्ष्यों में बड़ी संख्या में देवी की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इस क्रम में लक्ष्मी की बहुत सी मूर्तियों के उदाहरण मिलते हैं। लक्ष्मी की मूर्तियों में अलंकरण के रूप में हाथों में पदम की विशेषतः प्रस्तुत किया गया है। मरहुत, सांची, बोध गया तथा उड़ीसा से प्राप्त लक्ष्मी के विविध रूप तथा अलंकरण देखने को मिलते हैं। मथुरा कला के विभिन्न नमूनों में लक्ष्मी को विविध अलंकरणों से युक्त दिखाया गया है। कुषाण काल में मथुरा के आस–पास सरस्वती, तथा गुप्तकाल में दुर्गा के विविध स्वरूपों में अलंकरणों की समृद्धता दिखाई देती है। कुंडल, हार, त्रिशूल का विशेष प्रदर्शन किया गया है। गुप्तकाल में देवी के विविध रूपों को मूर्तियों में प्रस्तुत करते समय अलंकरणों के विविध रूपों का प्रयोग है।

मुख्य शब्द : गजलक्ष्मी, द्विभुजी देवी, त्रिभंग मुद्रा, मेखला, पादपीठ।

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय मूर्तिकला के विकास में हिन्दू देवी–देवताओं का विशेष महत्व रहा है। बहुत संख्या में देवी–देवताओं की मूर्तियों के साक्ष्य पुरातत्व खुदाई में प्राप्त होते हैं जैसे लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा।

शोध पत्र का उद्देश्य

1. प्राचीन भारतीय मूर्तिकला में भारतीय देवी मूर्तियों की बनावट तथा प्रस्तुतीकरण में प्रयुक्त अलंकरणों के विकास को प्रस्तुत करना।
2. प्राचीन भारत में भिन्न–भिन्न काल खण्डों में विभिन्न प्रकार की देवी मूर्तियों में अलंकरणों में समानता तथा विभिन्नता का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध पत्र के लिए निम्नलिखित ग्रन्थों का मुख्य रूप से अध्ययन किया है।

शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, प्रतिमा विज्ञान, लखनऊ, 1956 :– लेखक ने मूर्ति निर्माण कला की तकनीकों का विवरण प्रस्तुत किया है। साथ ही विभिन्न काल खण्डों में तकनीक तथा सामग्री के प्रयोग पर भी प्रकाश डाला है। पुस्तक मूर्ति निर्माण की विभिन्न प्रविधियों पर सशक्त लेखन है।

उपाध्याय, वासुदेव, भारतीय मूर्ति विज्ञान, वाराणसी, 1982 :– लेखक ने सिन्धु घाटी से लेकर गुप्तकाल तक हिन्दू, जैन, बौद्ध मूर्तियों के निर्माण तथा इनकी विशेषताओं पर विस्तृत लेखन किया है। विशेष रूप से कुषाण कालीन मूर्तिकला के केन्द्र के रूप में मथुरा, गान्धार तथा सारनाथ के योगदान पर भी रोचक प्रकाश डाला है।

पाण्डे, जय नारायण, भारतीय कला एवं पुरातत्व, इलाहाबाद 1990 :– इस पुस्तक में लेखक ने भारतीय कला के विभिन्न स्वरूपों एवं उनके विकास का प्रस्तुतीकरण किया है। पुस्तक में सिन्धु घाटी से लेकर गुप्त काल तक की मूर्तिकला का विवरण प्राप्त होता है।

जायसवाल, कुसुम, उत्तर भारत में प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियां, दिल्ली, 1992 :– लेखिका ने उत्तर भारत की प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियों का विवरण दिया है। जिनमें यक्ष यक्षिणी लक्ष्मी, सरस्वती देवी के विविध रूप की मूर्तियों का विवरण संक्षिप्त में दिया है।

सांस्कृत्यान, राहुल, बौद्ध दर्शन, इलाहाबाद, 2005 :– इस ग्रन्थ में इस महान विद्वान ने जहां बौद्ध दर्शन पर विस्तृत लेख प्रस्तुत किया है वहीं बौद्ध मूर्ति कला के विकास तथा उसके महत्व पर भी लेखन किया है।

वर्ष 2005 में उपरोक्त पुस्तक के प्रकाशन के बाद शोध विषय से सम्बन्धित अन्य किसी पुस्तक या ग्रन्थ को प्राप्त करने में शोधार्थी सफल नहीं रहा है।

हिन्दू देव–समूह में सौभाग्य, समृद्धि, सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। श्रीलक्ष्मी मूर्तियाँ लगभग सारे भारत में सब धर्मों में मान्य थीं। ऋग्वेद के खिलसूक्त से लेकर यजुर्वेद के पुरुष सूक्त में एवं समस्त भारतीय साहित्य और कला में, मुद्राओं पर, खिलौनों में देवी श्रीलक्ष्मी का वर्णन और अंकन पाया गया है। महाभारत और पुराण पद्माश्री के वर्णन से भरे पड़े हैं। वस्तुतः श्री लक्ष्मी एक लोकदेवता थीं जिनकी मान्यता ऋग्वेद के समय में थी और आज तक चली आ रही है। वह सब धर्मों में गृहस्थ जीवन की अधिष्ठात्री देवी थीं और आज भी हैं। भारतीय कला में लक्ष्मी के प्राचीनतम चित्रण शुंग काल से उपलब्ध होते हैं। शुंगकालीन सिक्कों एवं मूर्तियों में लक्ष्मी और उनके गजलक्ष्मी रूप के दर्शन होते हैं।[1] जे. एन. बनर्जी (1957)

सिक्कों पर लक्ष्मी का अंकन प्राचीन भारत में जनपद राज्यों के सिक्कों पर हुआ है। लक्ष्मी उज्जयिनी (ईसा पूर्व द्वितीय शती) के कुछ सिक्कों पर कदम पर आसीन है। पांचाल राजाओं भद्रघोष और फाल्गुनि मित्र के सिक्कों में पदम पर खड़ी हुई क्रमशः भद्रा और फाल्गुनि देवियाँ संभवतः लक्ष्मी हैं।

लक्ष्मी के हाथों में पदम का अंकन मथुरा के मित्र राजाओं एवं छत्रपों के सिक्कों पर मिलता है। गजलक्ष्मी कौशाम्बी (ईसा पूर्व तृतीय–द्वितीय शती) जनपद के सिक्कों पर अंकित हैं। अयोध्या के राजाओं ने भी गजलक्ष्मी को अपने सिक्कों पर स्थान दिया।[2] शास्त्री (1942)।

मूर्तिकला में लक्ष्मी एवं गजलक्ष्मी का अंकन भरहुत, सांची, बोधगया, उड़ीसा आदि की बौद्ध और जैन कला में दिखाई देता है। इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता में संगृहीत भरहुत की वेदिका स्तम्भ पर अंकित 'सिरिमा देवता' को लक्ष्मी का प्राचीनतम चित्रण माना गया है। सिरमा देवता रचना सौष्ठव एवं वस्त्राभूषणों की दृष्टि से वेदिका स्तम्भों पर अंकित अन्य पक्षी चुलकोका, महाकोका आदि स्त्री देवताओं से साम्य रखती हैं। अतः शुंग काल में लक्ष्मी भी यक्षी रूपों में निर्मित ज्ञात होती है। इस देवी का विकसित रूप भरहुत की एक अन्य वेदिका–स्तम्भ पर अंकित है। इसमें पद्य पर त्रिभंग–मुद्रा में खड़ी हुई देवी का दाहिना हाथ पद्यधारी है। लक्ष्मी का ऐसा चित्रण बोधगया की वेदिका पर चित्रित है।

लक्ष्मी का कमलालया रूप शुंगकालीन मृण्मूर्तियों में भी अंकित है। लक्ष्मी की कौशाम्बी से प्राप्त और इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित एक मृण्मूर्ति उल्लेखनीय है।

यहाँ पद्यभवन में द्विभुजी देवी पद्य पर खड़ी हुई है। उनके दाएं हाथ में पद्य है और बायाँ कटि पर स्थित है। लक्ष्मी की ऐसी ही मृण्मूर्तियाँ कौशाम्बी, मथुरा, लौरियानन्दगढ़ आदि से उपलब्ध हुई है। इन मूर्तियों के सन्दर्भ में बसाढ़ की एक मृण्मूर्ति उल्लेखनीय है जिसमें पद्यवन में खड़ी हुई पद्यहस्ता देवी के कन्धों पर पंख जैसा चित्रण है।[3] अग्रवाल (1966)

जैन कला में लोकप्रिय लक्ष्मी का अभिषेक रूप उड़ीसा में उदयगिरि और खंडगिरि की जैन गुफाओं में प्रवेश द्वार की चौखट पर अंकित है। अनन्तगुफा के चित्रण में पद्यहस्ता गजलक्ष्मी पद्यवन में खड़ी हुई पूर्ववत् चित्रित हैं, किन्तु यहाँ गजों की संख्या चार है।

इस प्रकार शुंगकाल में लक्ष्मी अथवा गजलक्ष्मी की मूर्तियों का निर्माण लोकप्रिय था। इस काल में कुषाण कालीन मूर्तिकला में अन्य देवी–देवताओं के समान लक्ष्मी और गजलक्ष्मी की स्वतन्त्र मूर्तियों का निर्माण कला का विकास हुआ। मथुरा के मूर्तिकारों ने इस देवी के उपर्युक्त स्वरूप को आंशिक परिवर्तन के साथ अपनाया। मथुरा से प्राप्त एवं विभिन्न संग्रहालयों में सुरक्षित लक्ष्मी एवं गजलक्ष्मी की मूर्तियाँ तत्कालीन मथुरा कला में प्रचलित मूर्तिगत परम्परा के अनुरूप निर्मित की गईं। ये मूर्तियाँ स्थानक एवं आसन दोनों स्थितियों में उपलब्ध हैं। इनमें द्विभुजी देवी का दाहिना हाथ कन्धे तक उठकर अभय–मुद्रा में स्थित है और बाँया नाल युक्त पद्य लिए हुए कटि पर स्थित है। लक्ष्मी की कुछ ऐसी ही सीानक मूर्तियाँ मथुरा संग्रहालय की शोभा बढ़ा रही है। आसन मूर्तियों में राज्य संग्रहालय, लखनऊ में संग्रहीत लक्ष्मी की एक कुषाणकालीन प्रतिमा उल्लेखनीय है।[4] बाशम (2002)

लक्ष्मी की राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहीत एक सुन्दर मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है। इसमें द्विभुजी देवी पद्मवन में पूर्वघट से निकल रहे पद्मों पर खड़ी हैं और वांये कर से अपने पयोधर को स्पर्श कर रही हैं। वे कुण्डलों, हारों, केयरों, कंकड़ों, मेखला आदि आभूषणों से अंलकृत हैं। उनके पीछे पुष्प, पत्तियों एवं कलियों से युक्त पद्मलता का अंकन है। यह प्रतिमा मथुरा के कुषाण शिल्पियों की अनुपम कृति है। लक्ष्मी की एक कुषाणकालीन मृण्मूर्ति बनागढ़ (बंगाल) से उपलब्ध हुई है।[5] पाण्डे (1990)

गुप्तकाल में धन एवं ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी का प्रचार व्यापक हुआ। मूर्तियों में लक्ष्मी का अभिषेक रूप अधिक लोकप्रिय हुआ। गजलक्ष्मी की मूर्तियाँ स्थानक और आसन दोनों स्थितियों में मिलती हैं। मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित कुछ स्नातक मूर्तियों में द्विभुजी गजलक्ष्मी के एक अथवा दोनों हाथों में पद्म है। गजलक्ष्मी की राज्य संग्रहालय, लखनऊ में संग्रहीत एक सुन्दर स्थानक मूर्ति उल्लेखनीय है। इसमें द्विभुजी देवी पद्म भवन में समसंग–मुद्रा में खड़ी हैं। उनके दक्षिण हाथ में श्रीफल और बांय हाथ में पाश है।[6] जयसवाल (1992)

देवी का केश विन्यास चूड़ामणि से अलंकृत है। और वे कुंडलों, हारों जैसे सामान्य आभूषणों से विभूषित हैं। कौशम्बी से प्राप्त गजलक्ष्मी की एक स्थानक मृण–मूर्ति इंडियन म्यूजिएम, कलकत्ता की धरोहर है। इस प्रकार गजलक्ष्मी–मृण्मूर्तियों की परम्परा गुप्तकाल में भी विद्यमान रहीं। गजलक्ष्मी की एक मूर्ति देवगढ़ से प्राप्त हुई है। इस गुप्तकालीन मूर्ति का दाहिना हाथ अभय मुद्रा में स्थित है। और बाँया हाथ पद्मधारी है। इस मूर्ति मे गजलक्ष्मी का चित्रण मत्स्य–पुराण के श्री–विवरण से प्रभावित है। गुप्तकाल की एक गजलक्ष्मी की मूर्ति श्रीनगर के श्री प्रताप सिंह संग्रहालय में सुरक्षित है जिसमें देवी के आसन के नीचे वाहन सिंह का अंकन उल्लेखनीय है। इस प्रकार गुप्तकालीन मूर्ति काल में गजलक्ष्मी के वाहन के रूप में सिंह का अंकन प्रारम्भ हो चुका था। कुबेर के साथ

गजलक्ष्मी के चित्रण की कुषाणकलीन परम्परा इस युग में भी प्रचलित थी।

सरस्वती के सुनियोजित प्रतिमा लक्ष्मण पुराणों, शिल्प एवं वास्तु शास्त्रों में मिलते हैं। विष्णु पुराण, देवीमहात्म्य, सूत संहिता, वापुपुराण, अग्निपुराण, एवं देवी भागवत पुराण में इस देवी का वर्णन सरस्वती तथा स्कन्दपुराण में भारती नाम से किया गया है। अपराजित पृच्छा में इसकी एक मूर्ति का वर्णन है जिसके चार नाम बताए गये हैं – महाविद्या, महावाणी, भारती और सरस्वती। रूपमंडन में महाविद्या और सरस्वती नाम से दो मूर्तियों का वर्णन है।

दीपार्णव और देवता मूर्तिप्रकरण में बारह मूर्तियों के प्रतिमा लक्षण मिलते हैं। इस प्रकार लक्षण–ग्रन्थों में इस देवी के निम्नलिखित रूपों के प्रतिमा–लक्ष्मण प्राप्त होते हैं–

1. सरस्वती
2. भारती
3. महाविद्यालय
4. द्वादश–सरस्वती

सरस्वती का प्रारम्भिक चित्रण शुंगकालीन भरहुत की वेदिका स्तम्भ पर अंकित वीणा के सदृश एक वाद्ययन्त्र बजाती हुई यक्षी मूर्ति के रूप में किया गया है। इस प्रकार सरस्वती भी अन्य देवियों की भाँति यक्षी के रूप में निर्मित ज्ञात होती है।[7] प्रसाद सिंह (1972)

ब्राह्मण धर्म की देवी के रूप में सरस्वती को ख्याती प्राप्त हो जाने पर भी उक्त देवी का जो प्राचीनतम मूर्ति उपलब्ध है, वह जैन धर्म से सम्बन्धित है। मथुरा में कंकाली टीले से प्राप्त कुषाणकाल की यह सरस्वती–मूर्ति राज्य संग्राहलय, लखनऊ में प्राप्त है। इसमें द्विभुजी देवी पादपीठ पर उत्कूटिकासन–मुद्रा में आसीन हैं। उनका कन्धे तक उठा हुआ दाहिना हाथ खंडित हो चुका है। बायें हाथ में पुस्तक है। देवी का मस्तक खंडित है। पादपीठ पर अंकित लेख के आधार पर इस मूर्ति का काल शक संवत 54(132 ई०) निर्धारित किया गया है। इस मूर्ति मे सरस्वती का जो प्राचीन रूप अंकित है, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि ब्राह्मण धर्म की सरस्वती का भी कुषाण काल में यही स्वरूप रहा होगा।[8] उपाध्याय (1982)

गुप्तकाल में सरस्वती को सिक्कों और मुद्राओं पर अंकित किया गया। समुद्रगुप्त के वीणा प्रकार के स्वर्ण सिक्कों पर चित्रित कार्नुकोपिया एवं पाशधारी देवी को सिक्कों के अग्रभाग में राजा द्वारा धारण की गई वीणा के आधार पर कुछ विद्वानों ने संगीत की अधिश्ठात्री 'वीणापाणि की संज्ञा दी है।

इस प्रकार कुषाणकालीन मूर्ति के अतिरिक्त सरस्वती की कोई ऐसी स्वतंत्र मूर्ति उपलब्ध नहीं हुई है जिसे छठी शती ईसवी से पूर्व कहा जा सके। उत्तर गुप्त काल में इस देवी की मूर्तियों के उदाहरण निश्चित रूप से मिलने लगते हैं।

प्राचीन शास्त्र में दुर्गा की चतुर्भुजी, अष्ठभुजी, दशभुजी, द्वादरशभुजी, अष्टादशभुजी और बीसीभुजी मूर्तियों का विवरण मिलता है। दुर्गा के प्राचीनतम चित्रण कुषाणकालीन हैं। इस काल में मथुरा में दुर्गा के अनेक पाषाण और मृण्मूर्तियाँ मिली हैं। मथुरा संग्रालय में सुरक्षित दुर्गा की ये स्थानक मूर्तियाँ द्विभुजी, चर्तुभुजी और षट्भुजी हैं। दुर्गा की द्विभुजी मूर्तियों में से प्रथम शती ईसवी की एक दुर्लभ स्थानक मूर्ति में देवी के साथ वाहन सिंह अंकित हैं। मूर्ति का उर्ध्व भाग खंडित है। दुर्गा का बायाँ हाथ कटि पर स्थित है। दायाँ हाथ संभवतः कुषाणकाल की मूर्ति निर्माण परम्परा में कन्धे तक उठकर अभय–मुद्रा में स्थित रहा होगा। इस समय की एक मूर्ति में दुर्गा सिंह पर समसंग मुद्रा में खड़ी हैं। उनका दाहिना हाथ अभय मुद्रा में स्थित हैं और बायाँ त्रिशूलधारी है। चतुर्भुजी मूर्तियों में भी दुर्गा के सामान्य दोनों हाथों में से पूर्ववत् दायाँ अभय और बायां कटिहस्त मुद्रा में स्थित है। शेष उर्ध्व करों में शक्ति एवं त्रिशूल अथवा त्रिशूल एवं खेटक अथवा खड्ग एवं त्रिशूल का चित्रण है। इन मूर्तियों में एक में वाहन सिंह का अंकन है। दुर्गा का ऐसा ही चित्रण शड्भुजी मूर्ति में दर्शनीय है। इनमें देवी समसंग–मुद्रा में खड़ी है। उनका दाहिना हाथ अभय–मुद्रा में और बायां हाथ पानपात्र लिये हुये कटिहस्त–मुद्रा में स्थित है। शेष दो दायें हाथों में क्रमशः शक्ति और खड्ग तथा बाएं हाथों में त्रिशूल और सर्प है। मूर्ति का निचला भाग खंडित है। कुषाण काल में दुर्गा के साथ वाहन का चित्रण अनिवार्य नहीं प्रतीत होता है।[8] उपाध्याय (1982)

गुप्तकाल में दुर्गा प्रायः सिंह पर आरूढ़ प्रदर्शित की गई है। इस काल की मूर्तियों में दुर्गा द्विभुजी और चतुर्भुजी है। मथुरा और लखनऊ की आसान मूर्तियों में द्विभुजी दुर्गा वाहन सिंह पर ललितासन मुद्रा में आसीन हैं। इनमें से मथुरा संग्रहालय की मूर्ति का दायां और लखनऊ संग्रहालय की मूर्ति का बायां हाथ शक्तिधारी है। इन दोनों मूर्तियों के शेष बाएं एवं दाएं हाथ खंडित हैं। सिंह वाहिनी दुर्गा की एक सुन्दर द्विभुजी मृण्मूर्ति लखनऊ संग्रालय की शोभा बढ़ा रही है। इनमें देवी का दाहिना हाथ वरद–मुद्रा में स्थित हैं और दाएं हाथ में त्रिशूल है। श्रावस्ती से प्राप्त एक दुर्गा की मूर्ति में ललाट पर तीसरा नेत्र अंकित है। चतुर्भुजी मूर्तियों में देवी स्थानक एवं आसन मुद्रा में स्थित है। दुर्गा की दसपुर (मन्दसौर) से प्राप्त और ग्वालियर संग्रहालय में प्रदर्शित एक स्थानक मूर्ति उल्लेखनीय है।[9] उपाध्याय (1982)

इसमें चतुर्भुजी दुर्गा अपने दोनों उर्ध्व करो से मस्तक पर ललाटिका भूषण धारण कर रही है, शेष अधः करों में से दायां पद्य और बायां कमंडलुधारी है। मूर्ति का अधः भाग खंडित है। इस गुप्तकालीन मूर्ति में श्रृंगार करती हुई देवी का चित्रण उल्लेखनीय है। दुर्गा की भीतरी से प्राप्त एक सुन्दर आसन मूर्ति राज्य संग्रहालय, लखनऊ की निधि है। इसमें चतुर्भुजी देवी खड़े वाहन सिंह पर आरूढ़ हैं। उनके चारों हाथों में क्रमशः त्रिशूल, खड्ग, खेटक और पद्य हैं। देवी कुंडलों, हारों, कंकणों आदि सामान्य आभूषणों से अलंकृत हैं। इस मूर्ति में सिंह पर आरूढ़ दुर्गा के चार हाथों एवं पद्य का चित्रण देवी भागवत पुराण में वर्णित दुर्गा के प्रतिमा लक्षण से साम्य रखता है।[10] उपाध्याय (1982)

निष्कर्ष

पुरातात्विक साक्ष्यों के आलोक में तथा अन्य द्वितीयक स्रोतों के आधार पर शोधार्थी ने इस निष्कर्ष पर पहुंचने का प्रयास किया है कि हिन्दू देवी मूर्तियों का

निर्माण विशेष प्रकार की तकनीक तथा अलंकरणों से युक्त था। प्राचीन भारतीय देवी मूर्तियों में गज लक्ष्मी तथा लक्ष्मी की मूर्तियों में अलंकरणों बहुत ही शोभायमान है। साथ ही गुप्तकाल में आसन तथा स्थानक स्थितियों में मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित गज लक्ष्मी की मूर्तियों तथा राज्य संग्रहालय लखनऊ में सुन्दर स्थानक मूर्ति जो द्विभुजी देवी की है। उनके अलंकरण का विशेष महत्व है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *बनर्जी, जे0एन0 (1957), डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, 42*
2. *शास्त्री, के. एन. (1942), सिन्धु सभ्यता का आदि केन्द्र हड़प्पा : पूना, 75–76*
3. *अग्रवाल, डा0 वासु देवशरण (1966), भारतीय कला, वाराणासी, 25*
4. *बाशम, ए0एल0 (2002), अद्भूत भारत, इलाहाबाद, 6*
5. *पाण्डे, डा0 जय नारायण (1990), भारतीय कला एवं पुरातत्व, इलाहाबाद, 12–13*
6. *जायसवाल, डा0 कुसुम (1992), उत्तर भारत में प्राचीन हिन्दू देवी मूर्तियों, दिल्ली, 82*
7. *सिंह, विन्ध्येश्वरी (1972), भारतीय कला को विहार की देन, पटना, 87*
8. *उपाध्याय, वासुदेव (1982), भारतीय मूर्ति विज्ञान, वाराणसी, 46*
9. *उपाध्याय, वासुदेव (1982), भारतीय मूर्ति विज्ञान, वाराणसी, 51*
10. *सांस्कृत्यान, राहुल, (2005), बौद्ध दर्शन, इलाहाबाद, 42*
11. *शुक्ल, द्विजेन्द्र नाथ, (1956), प्रतिमा विज्ञान (लखनऊ), 56*
12. *दास, रायकृष्ण (1975), भारतीय मूर्ति कला (वाराणसी), 36*